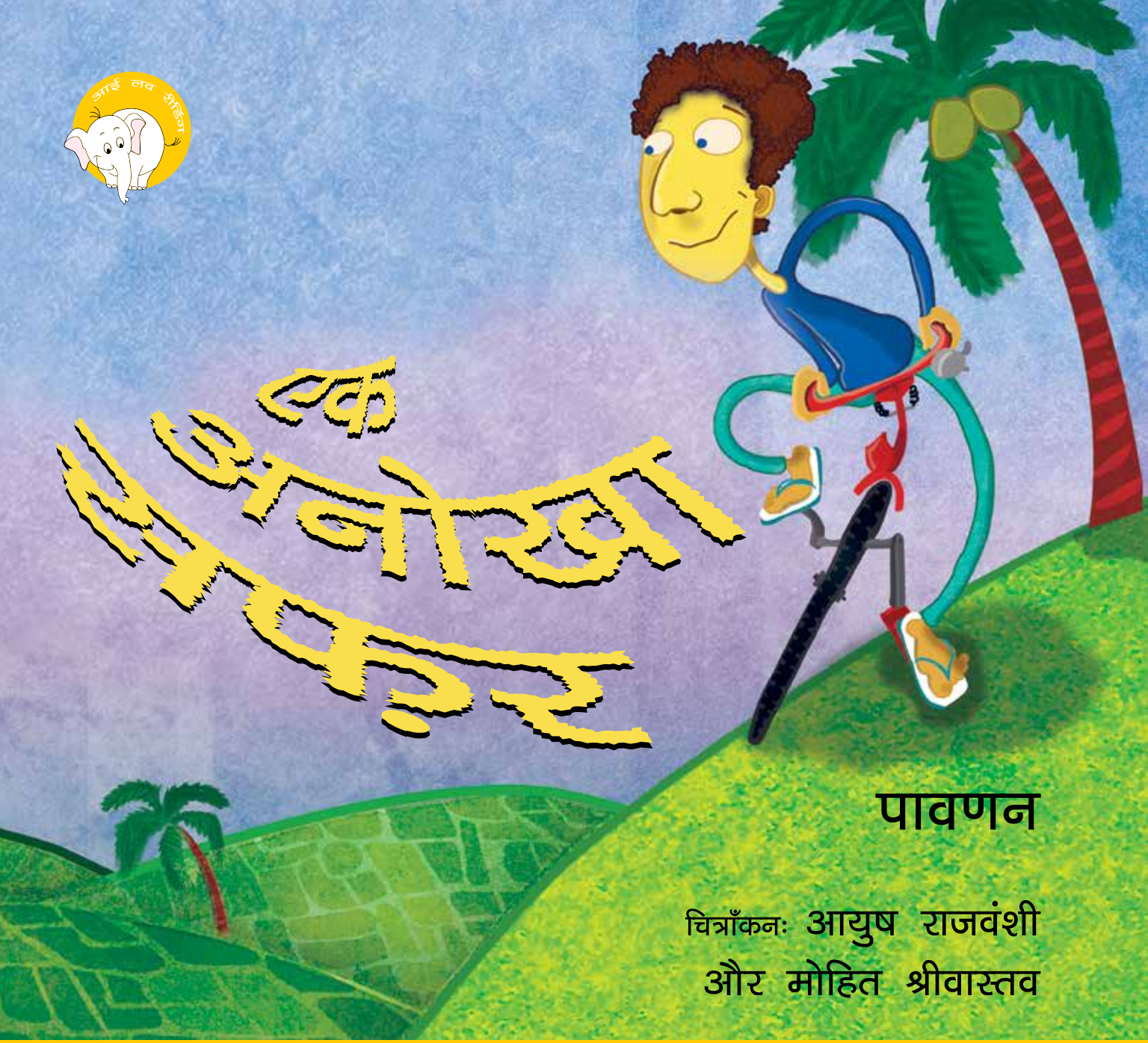

आई लव इंडिया

# एक अनोखा सफ़र



पावणन

चित्रांँकनः आयुष राजवंशी
और मोहित श्रीवास्तव

कथा की 300एम थिंकबुक

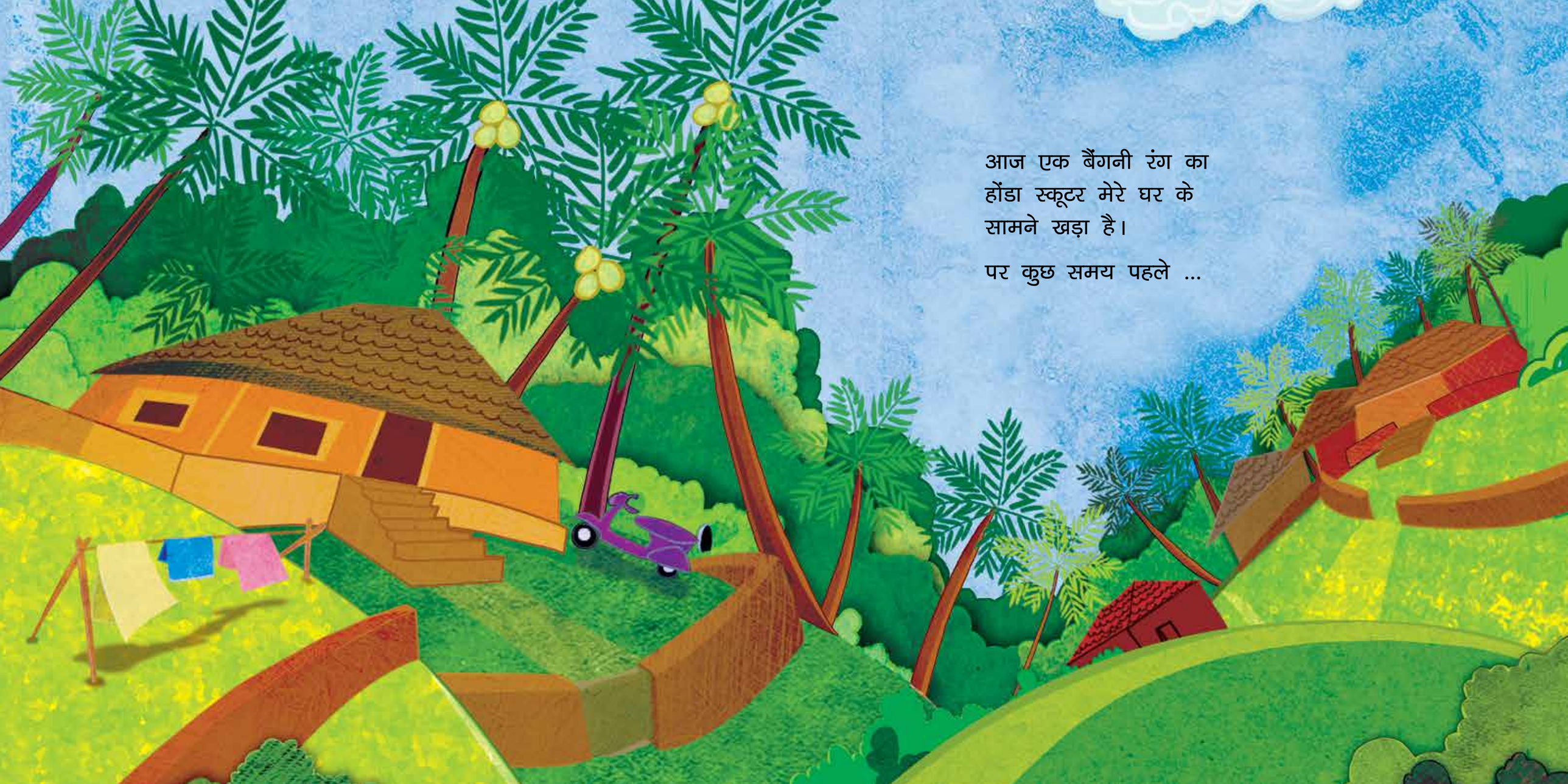

आज एक बैंगनी रंग का
होंडा स्कूटर मेरे घर के
सामने खड़ा है।

पर कुछ समय पहले ...

... मैं शहर से दूर
एक डाकघर में
काम करता था।

सपनों की दुनिया में
खोया, मैं पहाड़ों, समुद्रों,
जंगलों की सैर करने की
कल्पना करता रहता ...

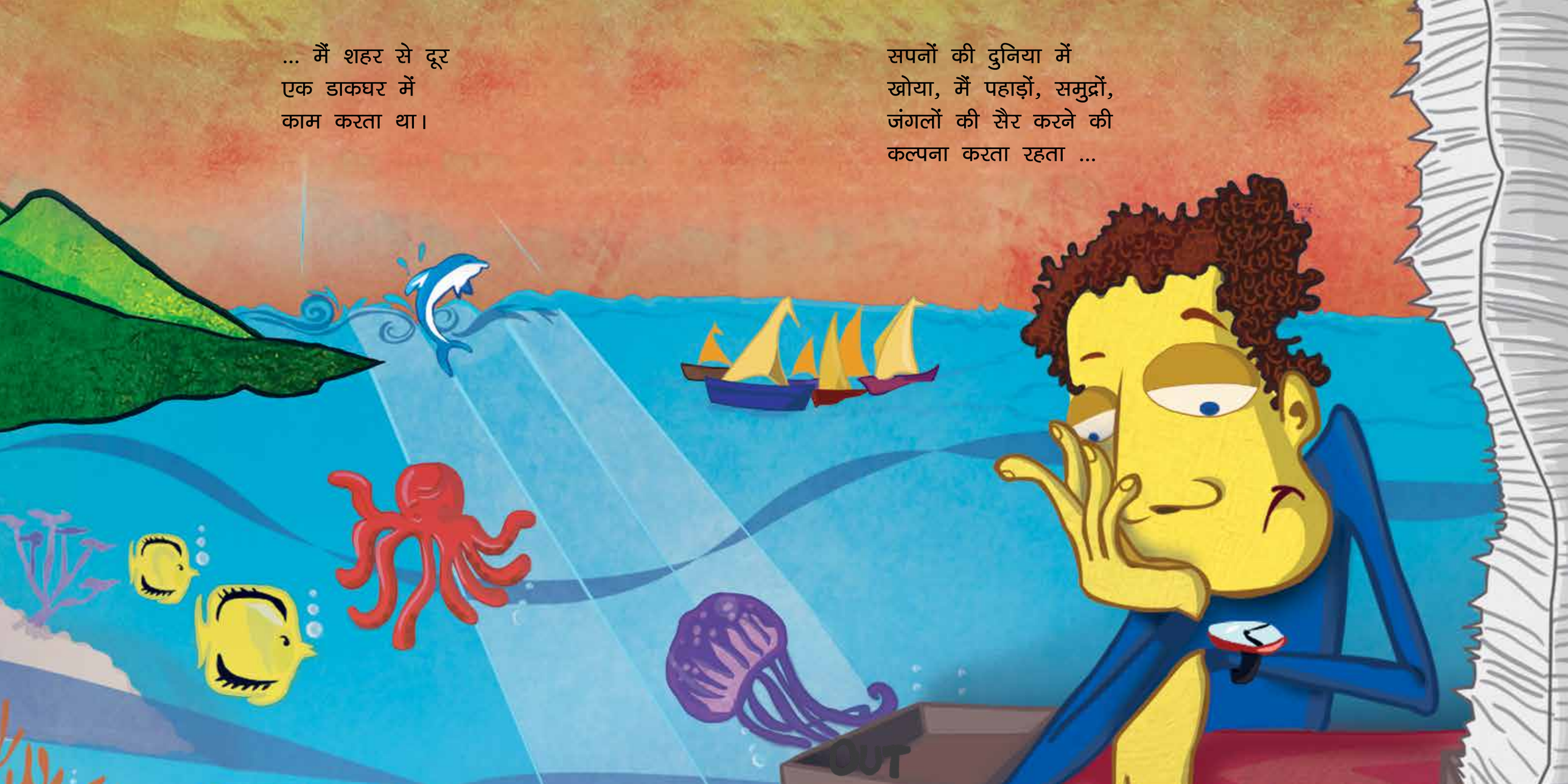

फिर एक दिन मैंने एक साइकिल खरीदी।

और उसके बाद क्या कहना, मैं साइकिल पर सवार घूमता रहता। कभी जाने तो कभी अनजाने शहरों की खोज कर आता। शोर से दूर ऐसी जगहों पर जा पहुँचता, जहाँ न लोग, न उनकी परछाई होती।

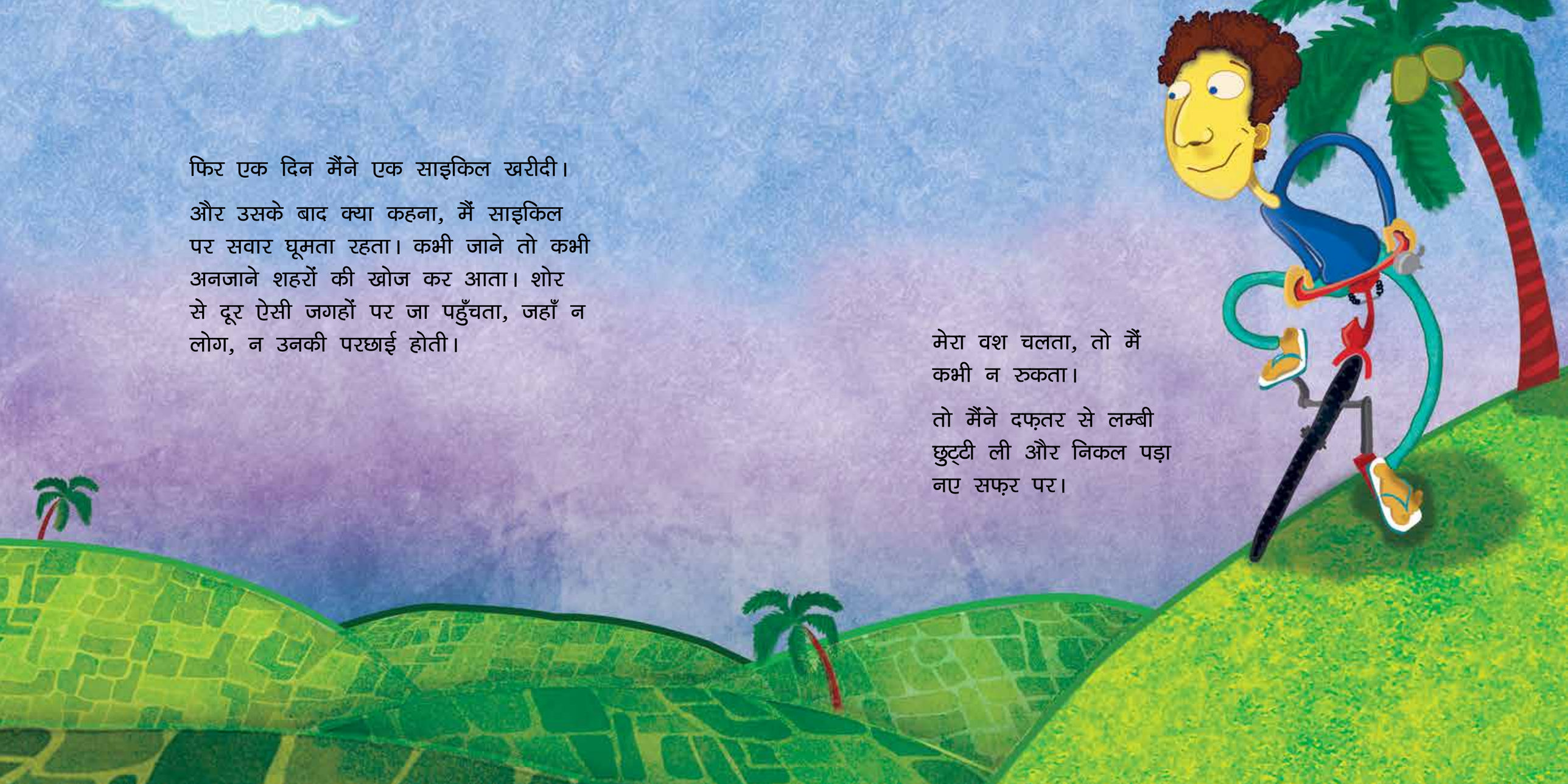

मेरा वश चलता, तो मैं कभी न रुकता।

तो मैंने दफ़्तर से लम्बी छुट्टी ली और निकल पड़ा नए सफ़र पर।

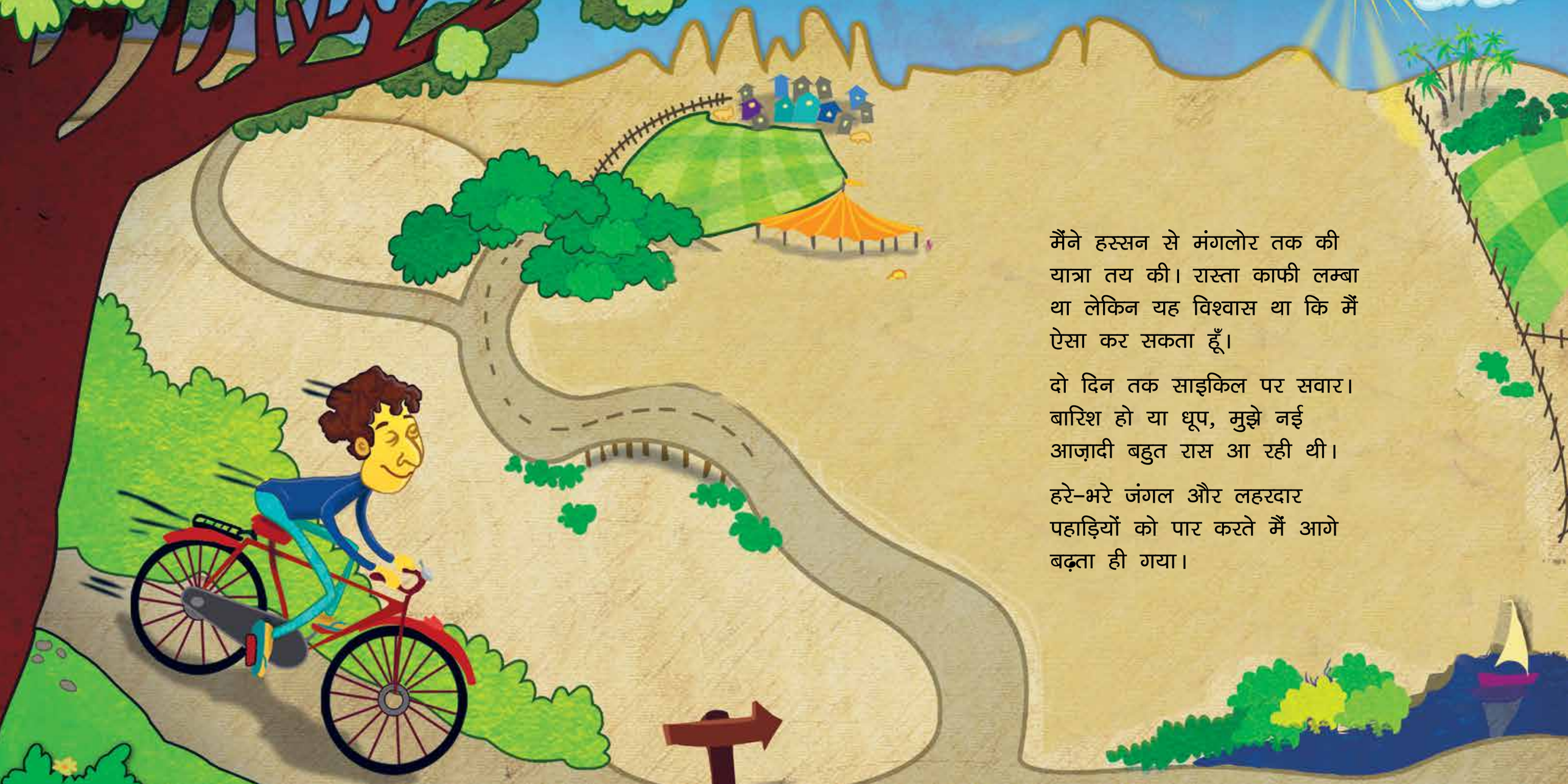

मैंने हस्सन से मंगलोर तक की यात्रा तय की। रास्ता काफी लम्बा था लेकिन यह विश्वास था कि मैं ऐसा कर सकता हूँ।

दो दिन तक साइकिल पर सवार। बारिश हो या धूप, मुझे नई आज़ादी बहुत रास आ रही थी।

हरे–भरे जंगल और लहरदार पहाड़ियों को पार करते मैं आगे बढ़ता ही गया।

मौसम बरसात का था,
हल्की-हल्की बारिश में
भीगने का मज़ा ही कुछ
और था।

तीसरे दिन मैं एक पथरीली पहाड़ी से नीचे की ओर उतर रहा था तभी ...

फुस्स्स्स!

हाय! टायर पंक्चर! मरम्मत का सामान तो घर पर ही भूल आया।

साइकिल को धकेलता, पैदल चलने लगा। चारों तरफ पेड़ों पर बड़े-बड़े कटहल लटक रहे थे। बंदर एक डाली से दूसरी डाली उछल-कूद कर रहे थे।

वहाँ आसपास कोई न था। मानो मैं एक अंजान दुनिया के रहस्यमयी रास्ते पर चला जा रहा था।

अचानक, मूसलाधार बारिश शुरू हो गई।
सफ़ेद मोती-सी बूँदें मुझे नहला रही थी
और मैंने ठंड महसूस की।

मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं, मैं कितनी
दूर निकल आया हूँ।

झमाझम बारिश के बीच एक चीख़
सुनाई दी। एक छोटा बच्चा, झोपड़ी के
चौखट पर खड़ा, पास बुला रहा था।

बच्चे ने प्यार से पूछा,

“आप कहाँ से आये हैं?”

“मंगलोर से।”

“क्या आप साइकिल से आये हैं?
200 किलोमीटर दूर से?”

मैंने हाँ में सिर हिलाया।

“क्या इतनी दूर साइकिल से यात्रा कर सकते हैं ... हिमालय तक भी?”

“हम्म ...”

“पाकिस्तान तक?”

“यदि तुम तय कर लो तो कुछ नामुमकिन नहीं है!”

वह निराश नज़रों से देखने लगा।

“मुझे भी साइकिल चाहिए, पर अम्मा खरीद कर नहीं देतीं।”

मैंने बच्चे की माँ की ओर देखा और समझ गया।

“बच्चे! तुम अभी छोटे हो, थोड़े बड़े हो जाओ। अम्मा ज़रूर खरीद देंगी।”

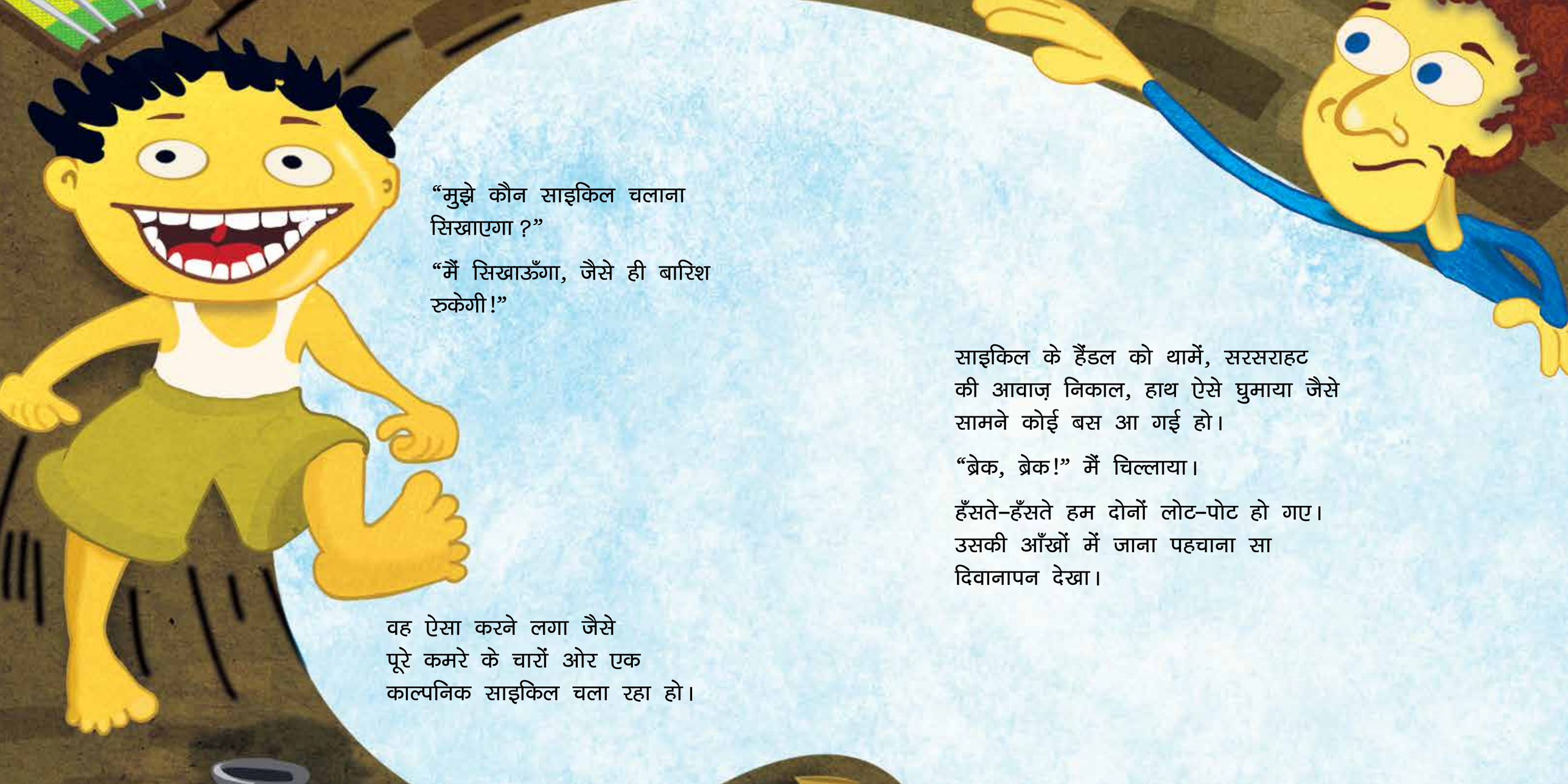

“मुझे कौन साइकिल चलाना सिखाएगा ?”

“मैं सिखाऊँगा, जैसे ही बारिश रुकेगी !”

वह ऐसा करने लगा जैसे पूरे कमरे के चारों ओर एक काल्पनिक साइकिल चला रहा हो।

साइकिल के हैंडल को थामें, सरसराहट की आवाज़ निकाल, हाथ ऐसे घुमाया जैसे सामने कोई बस आ गई हो।

“ब्रेक, ब्रेक!” मैं चिल्लाया।

हँसते-हँसते हम दोनों लोट-पोट हो गए। उसकी आँखों में जाना पहचाना सा दिवानापन देखा।

झिलमिलाती रात में, बच्चे ने बंगलोर, लालबाग, कब्बोन पार्क, उल्सूर झील का उत्साह से जिक्र किया।

“एक दिन मैं भी, आपकी तरह साइकिल से इन जगहों पर जाऊँगा,” उसने कहा।

उसकी आँखें मानो अंधेरे में
दो चमकते तारे।

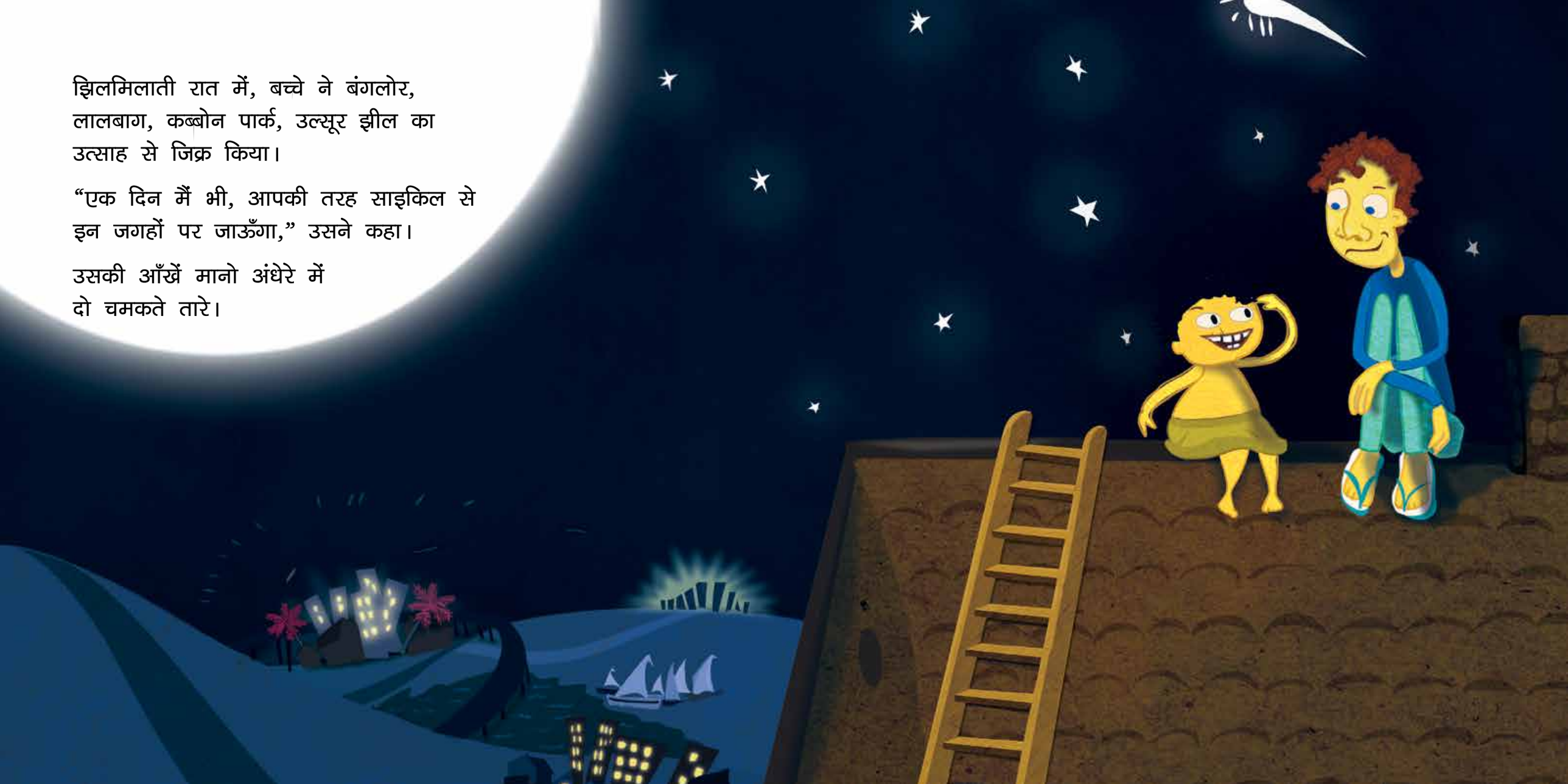

अगले दिन जब बारिश थमी, तो हम पंक्चर की मरम्मत के लिए पास के शहर में गए।

लौटते समय मैंने कहा, “चलो आओ, साइकिल पर बैठ जाओ।”

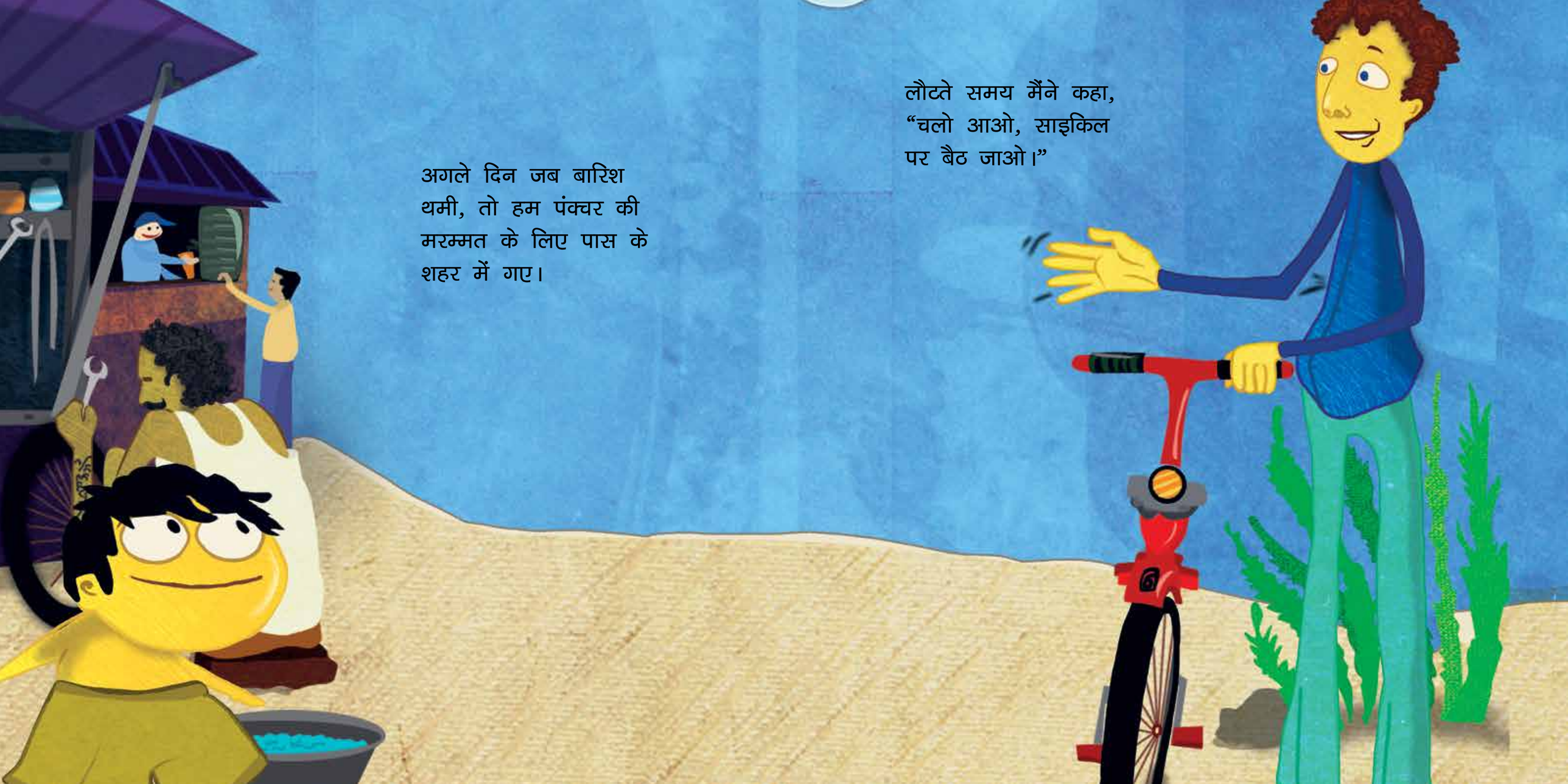

वह खुशी से उछलने लगा।

मैंने साइकिल को थामा, वह अपनी पीठ को सीधी कर पैर को पैडिल तक पहुँचाने की कोशिश करने लगा।

वह चिल्लाकर बोला।

“मैं तो उड़ रहा हूँ।”

वह तेज़ था,
जल्दी ही
साइकिल चलाना
सीख गया।

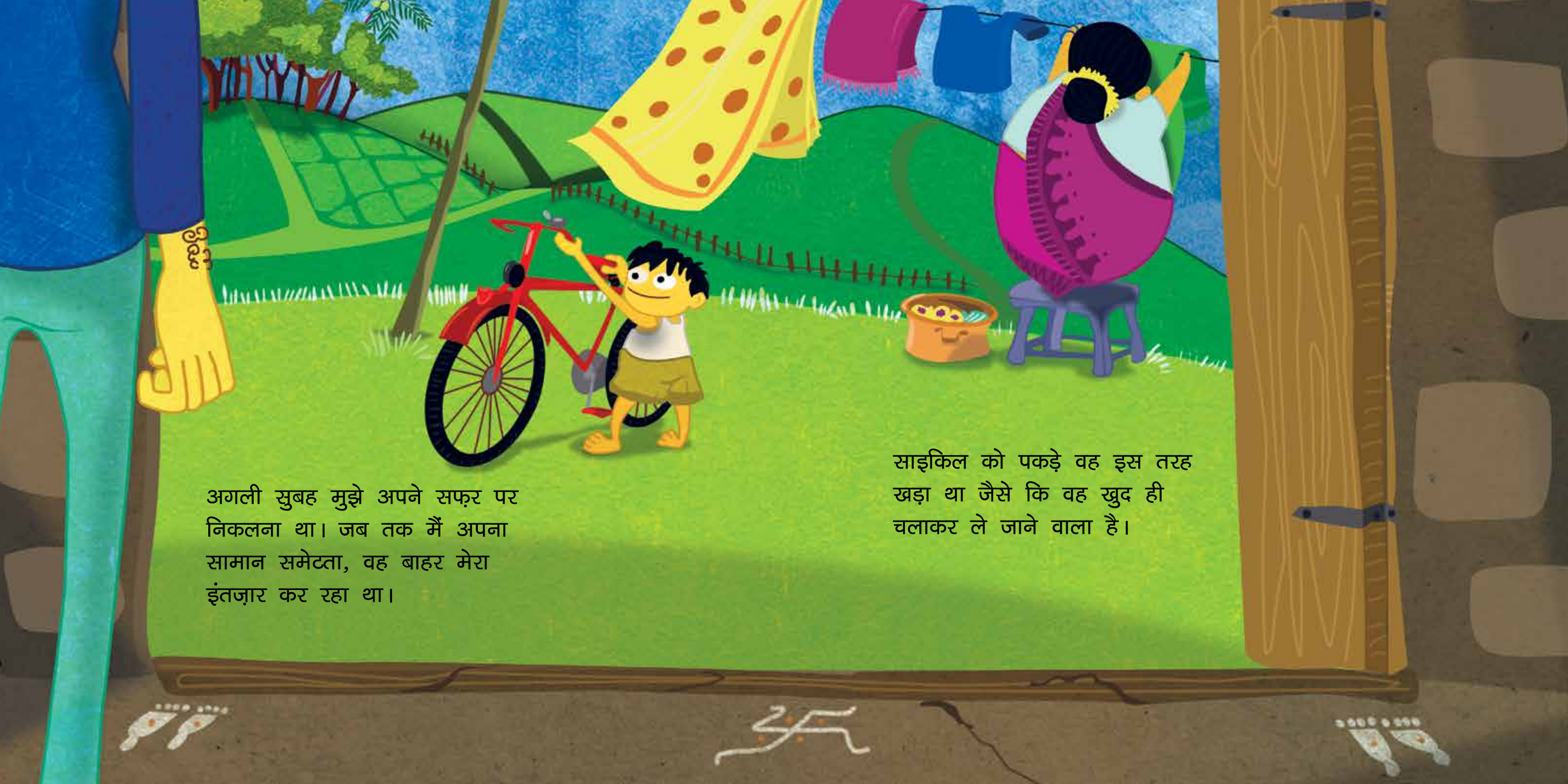

अगली सुबह मुझे अपने सफ़र पर निकलना था। जब तक मैं अपना सामान समेटता, वह बाहर मेरा इंतज़ार कर रहा था।

साइकिल को पकड़े वह इस तरह खड़ा था जैसे कि वह खुद ही चलाकर ले जाने वाला है।

वह मेरे साथ शहर के छोर तक आया।

“क्या मैं आख़िरी बार मोहल्ले के चारों ओर साइकिल की सवारी कर लूँ? जल्दी लौट आऊँगा!”

“सावधानी से ...” मेरी बात पूरी होने से पहले, वह रफचक्कर हो गया।

साइकिल, रिक्शा, ऑटोरिक्शा, लॉरियाँ ... न जाने कितने लोग हर दिशा में आ-जा रहे थे।

देखते ही देखते छोटा दोस्त, आँखों से ओझल हो गया।

पता नहीं क्यों? उसका परिवार, उसकी आशाएँ और सपनों के सोच में पड़ गया।

उसी समय हस्सन जाने वाली एक बस मेरे सामने आकर रुकी।

अचानक मैंने निर्णय लिया ...

बस में मुस्कुराते हुए चढ़ गया। और बस चल पड़ी।

जब मैंने दूर सड़क की ओर देखा तो उसका मुस्कुराता चेहरा प्रतीत हुआ।

**पावनन्न** एक उत्कृष्ट लेखक, अनुवादक एवं संपादक रह चुके हैं। 80 के दशक में उन्होंने लिखना शुरू किया। 1990 में उनका उपन्यास *सिधरगल* को तमिलनाडू सरकार की तरफ से पुरस्कृत किया गया। 1995 में इलकिया चिंतनै और तिरुपूर तमिल चंगम ने उनके उपन्यास *पाईमरा कप्पल* को सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित किया। उनको 1998 में कथा अवार्ड फॉर क्रिएटिव फिक्शन मिला, उनकी तमिल कहानी "पयणम" के लिए। उन्होंने कन्नड़ दलित प्रबंधों एवं आधुनिक कन्नड़ कविता के संकलन का संपादन किया है। वह घूमने और यात्रा करने में शौक रखते हैं। यह कहानी एक ऐसे सफ़र में मिले छोटे बच्चे पर आधारित है।

**एन कल्याण रमन** एक पुस्तक समीक्षक हैं, अंग्रेज़ी और तमिल भाषा में निबंध व प्रबंध लिखते हैं। इन्होंने बरटॉल्ड ब्रेख़्ट का *द एक्सेप्शन एण्ड द रूल* को तमिल में अनुवाद किया है।

**आयुष राजवंशी** ने एन. आई. डी. से एनिमेशन एण्ड फिल्म डिज़ाइन में स्नातक किया है। इन्होंने काफी शोज़ जैसे सीसमे स्ट्रीट, टेरा क्वीज़, विल्स इंडिया फैशन वीक में काम किया है। इनकी शॉर्ट फिल्म "द अर्थ स्टोरी" को यूनेस्को के क्लाईमेट चेन्ज कॉन्फ्रेन्स में दिखाया गया था।

**मोहित श्रीवास्तव** मुम्बई में स्थित एक विख़्यात चित्रकार एवं कथाकार हैं।

## क कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।" – **चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***


पहला हिंदी संस्करण 2021


कृति स्वामित्व © कथा, 2014, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © पावनन्न
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।


नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित


**हमारा लक्ष्यः** हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।


ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org


इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।

यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

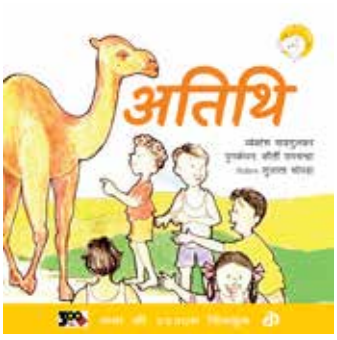

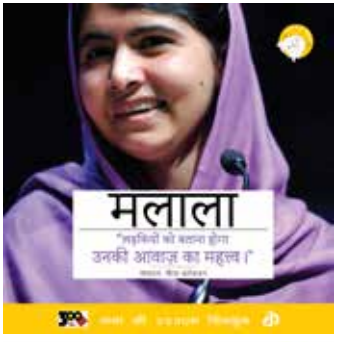

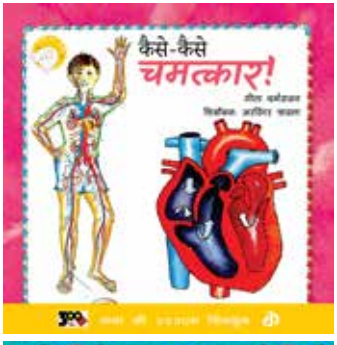

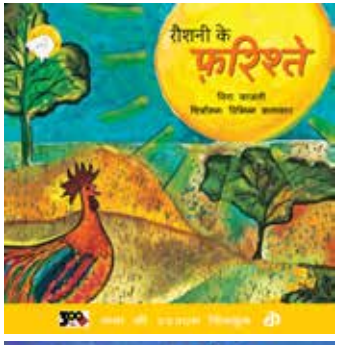

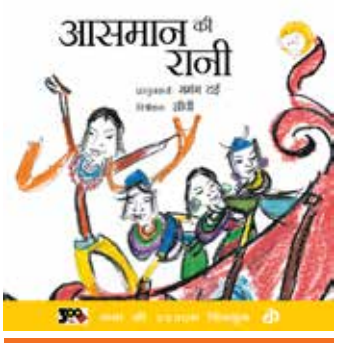

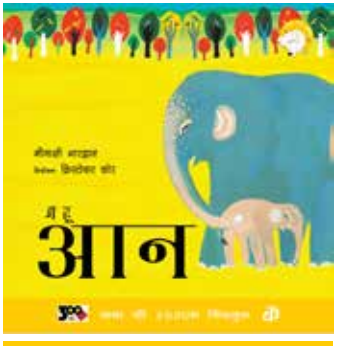

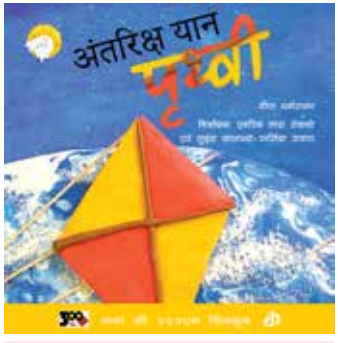

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

इसकी मीन श्रृंखला में

a katha book
for children
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
₹ xxx
www.katha.org